INTERNATIONAL CONFERENCE
SRU
CRETMASTSDEV
2015

Proceedings of International Conference on

"Current Research in Emerging Trends of Management, Arts, Science, Technology and Skill Development"

(CRETMASTSDEV - 2015)

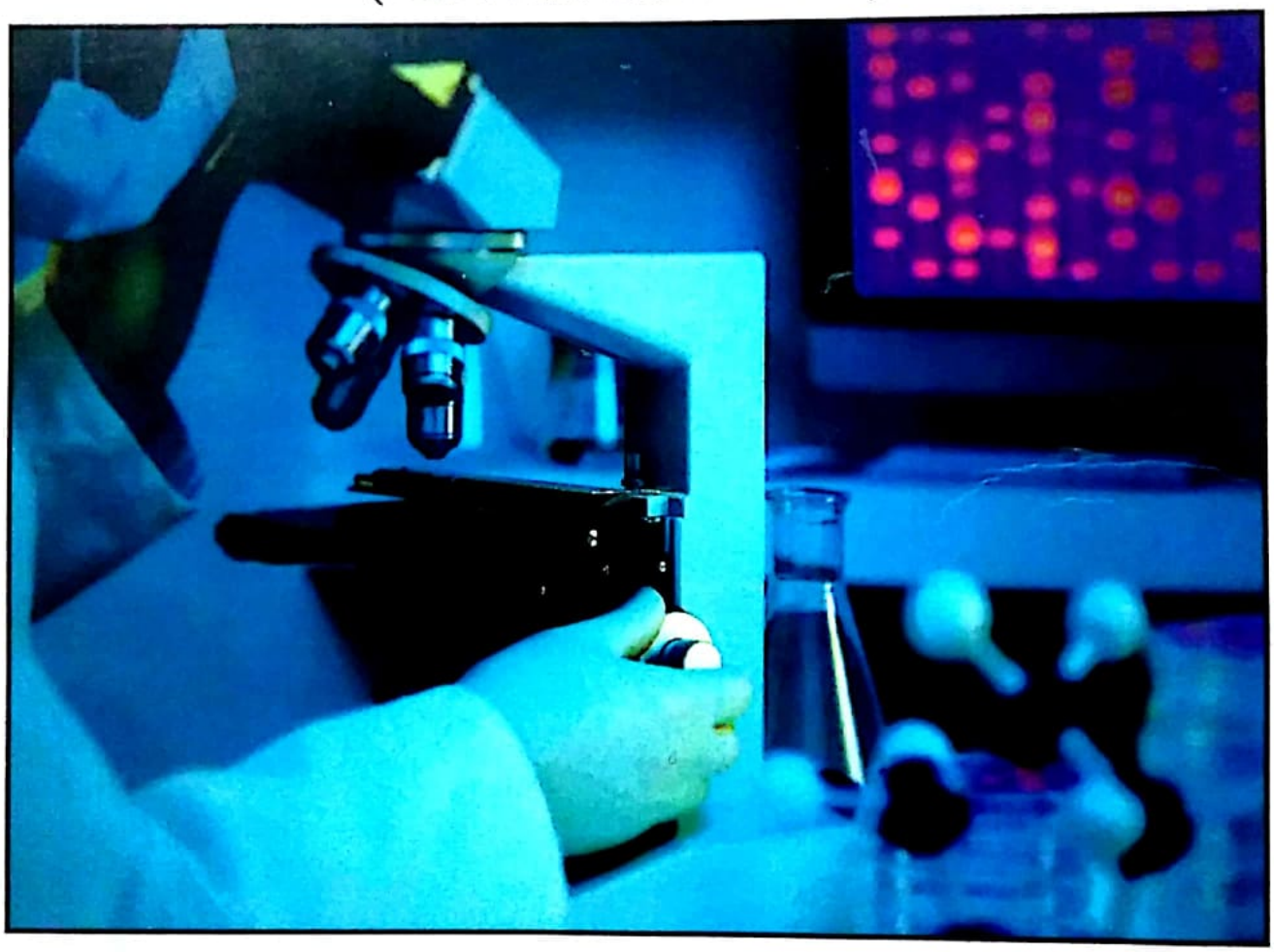

Organized by :
Department of Research
SunRise University
Bagad Rajput, Alwar (Rajasthan)
www.sunriseuniversity.in

Scanned by CamScanner

25	Anuj Kumar, Sandeep Rai	INSIGHTS ON ATTITUDES OF STUDENTS TOWARD PHYSICAL EDUCATION	122
26	Rakesh Kumar Patel , Dr. Rajeev Choudhary	MULTIPLE DICHOTOMY ANALYSIS BY SPSS: FOR SURVEY STUDIES	127
27	Bharati Rajak, Alok K. Singh	INFLUENCE OF PLYOMETRIC TRAINING PROGRAM ON SELECTED MOTOR FITNESS VARIABLES FOR FEMALE VOLLEYBALL PLAYERS	133
28	Dr. Priti Verma	ANALYSIS OF ACHIEVEMENT GOALS AND BELIEF ABOUT SUCCESS IN SPORTS AMONG FEMALE SPRINTERS, THROWERS, JUMPERS & HURDLERS	138
29	Seema	MODIFIED EIA FOR PROJECTS – AN INNOVATIVE METHOD TO MAKE THE PROJECTS ECO –FRIENDLY	143
30	Dr. Rakhi Sarraf , Dr. Anup Pradhan	JUSTICE DELAYED IS JUSTICE DENIED	149
31	Dr. Snehlata , Dr. Anup Pradhan	COALITION GOVERNMENT	152
32	Dr. Archanayadav, Mr. Ravindra Singh	SOCIAL ISSUES RELATES TO POLITICAL & ECONOMIC AREA	156
33	Mr. Deep Chand Dagar	URBANIZATION AND AGRICULTURE IN INDIA AND ITS CHALLENGES	159
34	Mrs. Madhu Dagar	BIOMASS: ENERGY AND ENVIRONMENTAL CONCERNS IN DEVELOPING COUNTRY	162
35	थ्वनीता श्राय	ग्ज्ञ।ध्ज्ञम्ज्ञ क्म् व्ज्ञर्ज्ञ श्ज्ञैक्ष्ज्ञथ्ण्ज्ञव न्थ्ट : र्व्ग्ज्ञन् व्ज्ञल् मै। डप्ज्ञछैयत्ज्ञ	166
36	छेवेनद्र थ्संह ए डू. धेनू पंत	तथ्त्लज्ञस् वै म्ज्ञैश्ख्ज्ञव र्ईज्ञैत् एव न्त्म् छृथ्ष्टक्ज्ञैण्ज्ञ	168
37	म्नोज कुमार	टज्ञयर्ज्ञर्व्त् रै ठ।थ्डयज्ञ मै। थ्रवफड्त्ज्ञ भ्ज्ञज्ञश्रत्	170
38	Dr. Anup Pradhan	POLITICAL ECONOMY DEVELOPMENT	174
39	टघ्वनी कुमार थ्संह	र्व्ग्ज्ञन् श्ज्ञज्ञैध्ज्ञ मै। वज्ञैप्ज्ञल् थ्व्ज्ञस् क्म् डभ्ज्ञश्रत्व—प्ृथ्त्ज्ञयज्ञ	182
40	Dr. Anupam Mitra	A STUDY OF SKILL DEVELOPMENT SCENARIO IN INDIA	184
41	डू. थ्रारध्ज्ञारीलाल श्ज्ञम्र	श्ज्ञैथ्क्ज्ञक टन्फस्।ध्ज्ञज्ञन्ज्ञै ; मै। ग्फण्ज्ञव्त्ज्ञज्ञ स्।व्र्ज्ञन् : एक टन्फभ्ज्ञव्ज्ञत्म्क टध्ययन्	191

SCIENCE & TECHNOLOGY

42	Shweta Singh, Dr. Anil Kumar Sharma	ZIEGLER NICHOLS METHOD: THE VITAL APPROACH FOR PID CONTROLLER OUTPUT REPSONSE	193
43	Sanjay Saini, Dr. Anil Kumar Sharma	SECURITY ANALYSIS OF FIBER-OPTIC CDMA NETWORKS USING 2-D W/T MPR OPTICAL ORTHOGONAL CODES	197

Scanned by CamScanner

शैक्षिक अनुसंधानों में गुणवत्ता संवर्धन : एक अनुभवात्मक अध्ययन

डॉ. गिरधारीलाल शर्मा
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं
girdhari1976@gmail.com

सारांश–

किसी भी राष्ट्र की उन्नति में उसकी शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण योगदान होता है तथा शिक्षा के प्रगतिशील विकास ने प्रमुख भूमिका शैक्षिक अनुसंधानों की होती है। वर्तमान में हम शिक्षा तंत्र का जो स्वरूप देख रहे हैं, वह शैक्षिक अनुसंधानों का ही प्रतिफल है। किन्तु इतने वर्षों के उपरान्त भी यदि शैक्षिक अनुसंधानों की गुणवत्ता को देखें तो वह संतोषजनक प्रतीत नहीं होती है। एम. एड. स्तर पर लघुशोध एवं पीएच.डी. स्वर के शोध प्रबन्ध महज एक डिग्री प्राप्त करने का साधन बनते जा रहे हैं। इसके लिए शोधार्थी, शोध विशेषज्ञ, प्रशिक्षण संस्थान तथा सरकारी तंत्र सभी संयुक्त रूप से जिम्मेदार हैं। शोधार्थियों में शोध दृष्टिकोंण का अभाव तथा शोध–निर्देशकों में प्रोफेसनलिज्म की कमी, शैक्षिक शोधकार्यों की घटती गुणवत्ता के सबसे बड़े कारण हैं। यदि हम राष्ट्र को विकसित देशों की सूची में लाना चाहते हैं तो शिक्षा में निरन्तर विकास करना होगा। इसके लिए आवश्यक है–शिक्षा में निरन्तर नवीन विषयों पर गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान कार्य। प्रस्तुत लेख में शैक्षिक अनुसंधानों में गुणवत्ता संवर्धन हेतु कुछ प्रमुख साधनों पर चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

शिक्षा समाज में चलने वाली वह सौद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिमार्जन किया जाता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य को सभ्य, सुसंस्कृत एवं समाजोपयोगी नागरिक बनाया जाता है। इस प्रकार शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा व्यष्टि, समाज एवं राष्ट्र सभी का विकास होता है।

पृथ्वी पर मानव से उद्भव से लेकर वर्तमान तक की विकास यात्रा पर यदि दृष्टि डालें, तो हम पाते हैं कि समय, आवश्यकता एवं परिस्थितियों के अनुसार प्रत्येक क्षेत्र, जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, विज्ञान एवं तकनीकी आदि में अनवरत परिवर्तन होते रहे अनुसंधान कार्यों की है। आज विभिन्न क्षेत्रों में विकास की जो ऊँचाइयां हम देख रहे हैं, हो रहे हैं तथा भविष्य में भी होते रहेंगे। ये परिवर्तन ही इन विभिन्न क्षेत्रों में विकास की दशा तथा दिशा निर्धारित करते हैं, तथा इन परिवर्तनों को लाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका इन क्षेत्रों में निरन्तर हो रहे है– यह अनुसंधानों का ही प्रतिफल है। शिक्षा क्षेत्र भी इन अनुसंधानों से अछूता नहीं है। स्वतंत्रता प्राप्ति से वर्तमान तक के शिक्षा तंत्र के अवलोकन से हमें ज्ञात होता है कि शैक्षिक अनुसंधानों में माध्यम से शिक्षा व्यवस्था को निरन्तर उत्कृष्ट, समाजोनुकूल तथा विश्वस्तरीय बनाने के प्रयास किये जाते रहे हैं, जिनमें कुछ हद तक हम कामयाब भी हुए हैं। शिक्षा में मनोविज्ञान, दर्शन, समाजशास्त्र तथा तकनीकी के सिद्धान्तों का अनुप्रयोग, शिक्षा अनुसंधानों से ही संभव हो पाया, जिनका प्रत्यक्ष लाभ शिक्षा तंत्र को हुआ। आज हम जो विभिन्न नई शैक्षिक योजनाएं देख रहे हैं– जैसे– मिड–डे–मील, मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा, गरीब व पिछड़े वर्गों को छात्रवृत्ति, सतत एव व्यापक मूल्यांकन, परीक्षा में ग्रेडिंग पद्धति, दूरस्थ शिक्षा, स्मार्ट क्लासरूम्स, ई–लर्निंग आदि शिक्षा में होने वाले उत्कृष्ट अनुसंधानों का ही सुखद परिणाम है तथा इनसे न केवल शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार बढा है, बल्कि गुणवत्ता में भी वृद्धि हुई है।

शैक्षिक अनुसंधान के अर्थ को स्पष्ट करते हुए **डब्ल्यू.एन. ट्रैवर्स** ने लिखा है–"शैक्षिक अनुसंधान वह प्रक्रिया है, जो शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार विज्ञान के विकास की ओर दिशा बोध प्रदान करता है तथा जिसके द्वारा शिक्षक इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करता है कि वह अपने लक्ष्य को प्रभावशाली विधियों से प्राप्त कर सके।"

इसी क्रम में **व्हिटनी** लिखते है– "शैक्षिक अनुसंधान का उद्देश्य शिक्षा की समस्याओं का समाधान करके, उनमें योगदान करना है, जिसमें वैज्ञानिक विधि, दार्शनिक विधि तथा चिन्तन का प्रयोग किया जाता है। वैज्ञानिक स्तर पर विशिष्ट अनुभवों का मूल्यांकन तथा व्यवस्था की जाती है, परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया जाता है, जिनकी पुष्टि से सिद्धान्त बनाए जाते हैं।"

अर्थात् शैक्षिक अनुसंधान, उस खोज को कहते हैं, जो शैक्षिक परिस्थितियों में किया जाता है तथा जो व्यवहार के विकास को वैज्ञानिक दशा प्रदान करता है। वास्तव में शैक्षिक अनुसंधान का उद्देश्य विद्यार्थियों की योग्यताओं तथा विकास की पद्धतियों का निर्माण करना है।

राष्ट्रीय स्तर अथवा राज्य स्तर पर अन्यक्षेत्रों में हो रहे अनुसंधान कार्यों की गुणवत्ता की दृष्टि से शैक्षिक अनुसंधान कार्यों से तुलना करें, तो हमें निराशा ही हाथ लगती है। शिक्षा में हो रहे अनुसंधानों की गुणवत्ता में निरन्तर गिरावट देखने को मिल रही है। एम.एड. स्तरीय लघुशोध हों या पीएच.डी. के शोधकार्य दोनों महज कागज पूर्ति करके डिग्री प्राप्त करने तक सीमित होते जा रहे हैं। हालात तो इतने बिगड़ चुके हैं कि एक राज्य के वि.वि. के शोधप्रबन्ध, दूसरे राज्य के विश्व विद्यालयों में हूबहू प्रस्तुत कर दिये जाते हैं और उन्हें डिग्री भी मिल जाती है। इसका पता तब चलता है जब मौखिक परीक्षा के दौरान कभी–कभी तो शोधार्थी, अपने शोध का शीर्ष तक सही नहीं बता पाते बाकी सबकी बात तो दूर की कौड़ी है। हम यह जानते हैं कि समाज और राष्ट्र का विकास, प्रत्यक्षतः शिक्षा से जुड़ा होता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा का विकास शिक्षा में होने वाले अनुसंधान तथा उनकी गुणवत्ता से जुड़ा होता है। अतः वर्तमान में शैक्षिक अनुसंधानों की गुणवत्ता संवर्धन के विषय पर गंभीर चिन्तन करना आवश्यक है। प्रस्तुत लेख में उन साधनों पर चर्चा करने का प्रयास किया गया है, जो शैक्षिक अनुसंधान को गुणवत्तापूर्ण बनाने में सहायक हो सकते हैं।

शैक्षिक अनुसंधानों की गुणवत्ता में संवर्धन हेतु कुछ प्रमुख सुझाव निम्नलिखित हैं–

- **एम.एड. स्तर पर शोध दृष्टिकोंण का विकास–** शिक्षा में अनुसंधान की नींव एम.एड. स्तर पर लघुशोध प्रबन्ध के माध्यम से रखी जाती है। इस अवधि में पहली बार एम.एड. प्रशिक्षाणार्थी शोध–प्रक्रिया से परिचित होते हैं, शोध के मूल सम्प्रत्य को समझते हैं तथा तद्नुसार कार्य में संलग्न होते हैं। किन्तु वर्तमान में प्रशिक्षण संस्थानों में लघु–शोध प्रबन्धों का स्तर अत्यंत निम्न है। इसके लिए न केवल प्रशिक्षणार्थी, बल्कि प्रशिक्षक तथा संस्थान प्रबन्धन भी उतना ही जिम्मेदार है। अधिकांश प्रशिक्षण संस्थानों में एम.एड. स्तर के योग्य प्रशिक्षक ही नहीं है, और जिन संस्थानों में हैं भी तो प्रशिक्षणार्थी भी कुछ करना नहीं चाहते। वे महज पूर्व लघुशोध कार्यों की नकल कर अपना कार्य पूरा कर लेते हैं। इस प्रकार जब नींव की कमजोर है तो भव्य इमारत का सपना देखना बेमानी ही होगी। अतः आवश्यक है कि एम.एड. स्तर पर प्रशिक्षणार्थियों में शोध दृष्टिकोंण का विकास किया जाए। उन्हें शैक्षिक तथा सामाजिक समस्याओं पर चिन्तन हेतु प्रेरित किया जाए, साथ ही शोध–प्रक्रिया की सम्पूर्ण जानकारी उन्हें प्रदान की जाए ताकि वे इसका उपयोग, अपने अनुसंधान में कर सकें।

- **कोर्स–वर्क में पारदर्शिता–** शिक्षा में अनुसंधानों की गुणवत्ता संवर्धन की दृष्टि से सरकारी तंत्र स्तर पर शोधपूर्व प्रवेश परीक्षा तथा कोर्सवर्क अनिवार्य करने का प्रावधान किया गया, जो कि निश्चित रूप से स्वागत योग्य कदम है। यह कदम और भी सार्थक होता यदि इसके क्रियान्वयन के आंकलन का भी कोई सख्त प्रावधान किया गया होता। आज अनेक विश्वविद्यालय तथा प्रशिक्षण संस्थानों में यह कोर्स वर्क महज औपचारिकता बन कर रह गया है। कहीं इसे एक महिने में, कहीं 15 दिन में तो कहीं 3 महिने में भी पूर्ण कर दिया जाता है, जिस कारण इसका उद्देश्य अपूर्ण ही रह गया है। इस स्तर पर पारदर्शिता सर्वाधिक आवश्यक है। कोर्सवर्क में प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य करते हुए उन्हें सम्पूर्ण शोध प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी प्रदान की जानी चाहिये। इस अवधि में शोध विद्वानों को संस्थान में बुलाकर

Scanned by CamScanner

प्रशिक्षणार्थियों में शोध अभिवृत्ति विकसित करने का प्रयास करना चाहिये, साथ ही उन्हें अधिकाधिक शोध–कार्य में व्यस्त रखना चाहिये। कोर्स वर्क के अन्त में ली जाने वाली परीक्षा औपचारिकता न होकर, उच्च स्तरीय होनी चाहिये, ताकि शोध कार्य हेतु अच्छे शोधार्थी मिल सकें।

- **शोध कार्य हेतु तत्कालीन शैक्षिक एवं सामाजिक विषयों का चयन–** प्रायः यह देखा जाता है कि शोधार्थी, शोधकार्य हेतु पुराने विषयों में ही एक–दो चर कम या अधिक कर नया विषय बना लेते हैं, या फिर ऐसे प्रकरण का चयन करते हैं जिसमें आसानी से कार्य हो सके और उन्हें कोई अधिक परिश्रम न करना पड़े। यह नकारात्मक मानसिकता है जिसका प्रभाव शोध की गुणवत्ता पर पड़ता है। इसके समाधान में शोध निर्देशक की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्हें ऐसे विषयों पर शोध की अनुमति प्रदान ही नहीं करनी चाहिये। इसके साथ ही स्वय शोधार्थियों को भी अपनी मानसिकता बदलनी होगी। जब वे अनुसंधान के क्षेत्र में आये हैं तो उन्हें ऐसाविषय चयन करना चाहिये, जिसका प्रत्यक्ष लाभ शिक्षा तंत्र तथा समाज को मिले। वर्तमान में शिक्षा में संवेगात्मक एकता, राष्ट्रीय एकता, धर्म निरपेक्षता, धार्मिक सहनशीलता, सामाजिक समानता, राजनैतिक स्वतंत्रता, लोकतंत्रात्मक जैसी भावनाओं की चेतना उत्पन्न करना, उसे संगठित करना आदि गहन समस्या है, जिन पर अनुसंधान किये जाने चाहिये।

- **शोध रूपरेखा का निष्पक्ष आंकलन–** प्रायः यह देखा जाता कि शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत रूप–रेखा शोध निर्देशक द्वारा अपने पहचान के विशेषज्ञों के पास ही आंकलन के लिए भेज दी जाती है या उन्हें संस्थान से ही बुला लिया जाता है तथा वे एक–दो सुझावों के साथ उसे स्वीकृत भी कर देते हैं, तत्पश्चात् शोधार्थी उन सुझावों को न भी माने तो कोई फर्क नहीं पड़ता। जिस रूपरेखा के आधार पर पूरा शोध कार्य होना है, जब उसमें ही खामियां है तो शोध में गुणवत्ता कैसे आ सकती है। इस स्तर पर सुधार अत्यंत आवश्यक है। विशेषज्ञों द्वारा बिना किसी पक्षपात के शोध रूपरेखा की बारीकी से जांच करनी चाहिये, तथा तब तक उसे स्वीकार नहीं करना चाहिये जब तक वह मानकों पर खरी न उतरे। साथ ही शोधार्थी को भी विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर एक स्तरीय शोध रूपरेखा बनाने का प्रयास करना चाहिये।

- **उपकरण निर्माण एवं तथ्य संग्रह के ईमानदारी–** शोधकार्य की गुणवत्ता संग्रहित तथ्यों, उनके सटीक विश्लेषण तथा उनके आधार पर निष्कर्ष निरूपण पर निर्भर करती है। तथ्य संग्रह हेतु शोधार्थी या तो मानक उपकरणों को प्रयुक्त करते हैं या स्वयं उपकरण निमित करते हैं। उपकरण निर्माण एक परिश्रम पूर्ण तथा समयसाध्य कार्य है, इसलिए प्रायः शोधार्थी इसे रूचिपूर्वक नहीं बनाते। साथ ही स्वनिर्मित उपकरणों को जांच हेतु भी उन विशेषज्ञों के पास भेजा जाता है जो जान–पहचान वाले होते हैं, फलतः कुछ संशोधनों के साथ उसे स्वीकार कर लिया जाता है। एक तो उपकरण दोषयुक्त, और उसे भी प्रायः सम्पूर्ण न्यादर्श पर प्रशासित नहीं किया जाता, तो कैसे शोधकार्य गुणवत्तापूर्ण होगा? यदि उपकरण निर्माण में शोधार्थी तथा उसकी जांच में विशेषज्ञ पूर्ण ईमानदारी का परिचय दें तो शोधकार्यों की गुणवत्ता में निश्चित ही संवर्धन होगा।

- **शोध निर्देशक का प्रोफेशनल दृष्टिकोंण–** शैक्षिक शोधकार्य की गुणवत्ता में शोध निर्देशक का योगदान सर्वाधिक होता है। क्योंकि शोधार्थी वैसे ही कार्य करता है, जैसे कार्य करने हेतु उसे निर्देशित किया जाता है। शोध निर्देशक को शोधार्थी को यथोचित समय देना चाहिये, जहां–जहां शोधार्थी को समस्याएं आ रही है, उन्हें धैर्यपूर्वक सुनते हुए उनका समाधान करना चाहिये तथा इससे भी महत्वपूर्ण निर्देशक द्वारा शोधार्थी को निरन्तर प्रोत्साहित करते रहना चाहिये ताकि वह स्तरीय कार्य कर सके। लेकिन दुर्भाग्य से अनेक उदाहरण ऐसे है, जहां निर्देशकों द्वारा शोधार्थियों का शोषण किया जाता है, उनकी मजबूरियों का फायदा उठाया जाता है, जो अनेक बार समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलता है। ऐसे निर्देशकों के लिए शोधकार्य महत्वपूर्ण नहीं होता, उनकी अनुचित मांगों की पूर्ति ज्यादा महत्वपूर्ण होती है, जिससे शोधकार्यों का स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। अतः आवश्यकता है– प्रोफेशनल दृष्टिकोंण के विकास की, निजी स्वार्थ से उपर उठकर राष्ट्रहित में चिन्तन करने की।

- **क्रियात्मक तथा प्रायोगिक अनुसंधानों पर बल–** शोधार्थियों को न केवल तत्कालीन शैक्षिक समस्याओं को अपने शोधकार्य का विषय बनाना चाहिये, अपितु उनका सरल समाधान भी प्रस्तुत करना चाहिये। इसके लिए क्रियात्मक तथा प्रायोगिक अनुसंधान कार्यों पर अधिक बल दिया जाना चाहिये, जो कि वर्तमान की आवश्यकता है। हम देखते हैं कि प्रायः शोधार्थी सर्वेक्षण के माध्यम से कुछ आंकड़े प्रस्तुत कर देते हैं या दर्शनिक शोध द्वारा तथ्यों को प्रस्तुत कर दिया जाता है। जबकि वास्तविक आवश्यकता है– समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने की; अतः इस दिशा में चिन्तन किया जाना चाहिये।

- **अनुसंधान के दौरान निश्चित अन्तराल पर कार्य का प्रस्तुतिकरण–** प्रायः यह देखा जाता है कि शोध रूप–रेखा स्वीकार होने के बाद शोधार्थी पूर्ण उत्साह से शोधकार्य में नहीं जुटते बल्कि अन्य कार्यों से संलग्न हो जाते है तथा जब उनका समय पूर्ण होने वाला होता है तब 4–6 महिने में शोधकार्य पूर्ण कर लेते हैं। किसी एक शोध को पूरा करने में 2 वर्ष भी कम होते है, वहीं यदि कार्य 4–6 महिने में पूरा किया जाएगा तो उसकी गुणवत्ता पर प्रश्न चिन्ह लगना स्वाभाविक है। इस हेतु यह अनिवार्य किया जाना चाहिये कि शोधार्थीप्रति छः महिने में अपनी शोध की प्रगति शोध समिति के समक्ष प्रस्तुत करे। यदि शोध समिति उसकी प्रगति से संतुष्ट न हो तो आवश्यक कार्यवाही की जानी चाहिये। इससे न केवल शोधार्थी पूरे वक्त शोधकार्य में संलग्न रहेंगे, बल्कि शोध गुणवत्तापूर्ण भी होगा।

- **शोधकार्य की जाँच एवं मौखिक परीक्षा में निष्पक्षता–** शोधकार्य के पूर्ण होने के उपरान्त उसे जाँच हेतु तीन विशेषज्ञों के पास भेजा जाता है तथा संतोषजनक होने पर अंत में शोधार्थी की मौखिक परीक्षा ली जाती है। इन दोनों स्तरों पर निष्पक्षता नितान्त आवश्यक है। लेकिन कहीं–कहीं यह देखा जाता है कि शोधकार्य में अनेक कमियां होने के बावजूद विशेषज्ञ उसे कुछ सुझावों के साथ लौटा देते हैं और मौखिक परीक्षा में जब शोधार्थी अपने शोधकार्य से सम्बन्धित किसी प्रश्न का जवाब नहीं दे पाते, उस स्थिति में भी उनको डिग्री प्रदान कर दी जाती है। इससे शोधकार्य की गुणवत्ता निश्चित ही प्रभावित होती है। इसके लिए यह अवश्य होना चाहिये कि शोधकार्य की कमियों का विशेषज्ञों द्वारा स्पष्ट उल्लेख करते हुए, निर्देश देना चाहिये कि निर्देशित संशोधन कर पुनः जाँच करवायें; चाहे इसमें थोड़ा वक्त क्यों न लगे। इसके साथ ही मौखिक परीक्षा में यदि कोई शोधार्थी, अपने शोध से सम्बन्धित स्पष्टीकरण ही नहीं दे पा रहा है तो, उसके द्वारा किया कार्य ही संदेह के घेरे में आ जाता है। इस स्तर पर भी कुछ निश्चित मानक बनाये जाने चाहिये ताकि शोधकार्यों को गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सके।

इस प्रकार यदि उपरोक्त वर्णित सुझावों पर विचार किया जाए तो काफी हद तक शैक्षिक अनुसंधानों में गुणवत्ता संवर्धन किया जा सकता है। आधुनिक समय में तीव्र सामाजिक परिवर्तनों के कारण शिक्षा के उपयुक्त उद्देश्यों को स्पष्ट करना, बदलते हुए सामाजिक परिवेश में शिक्षा के स्वरूप को समायोजित करना, व्यावसायिक मार्गदर्शन करना, औद्योगिक तथा तकनीकी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा देने की सुविधा प्रदान करना आदि अनेक समस्याओं पर अनुसंधान की आवश्यकता है। साथ ही ये अनुसंधान गुणवत्तापूर्ण भी हो ताकि इनका लाभ शिक्षा तंत्र तथा समाज को प्राप्त हो सके। यदि प्रत्येक शोधार्थी स्वयं में सकारात्मक शोध दृष्टिकोंण तथा प्रत्येक शोध निर्देशक एवं शोध विशेषज्ञ स्वयं में प्रोफेशनल दृष्टिकोंण के विकास का प्रयास करे तो, शैक्षिक अनुसंधानों में गुणवत्ता की दृष्टि से आमूलचूल परिवर्तन लाया जा सकता है जो कि वर्तमान समय की सबसे बड़ी मांग भी है।

संदर्भ ग्रंथ–

- सरीन एवं सरीन (2008), शैक्षिक अनुसंधान विधियां, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- श्रीवास्तव, डी.एन. (2012), अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
- सिंह, अरूण कुमार (2012), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, मोतीलाल–बनारसीदास, दिल्ली।
- The Prymary Teacher (jan.-june, 2014), NCERT, New Delhi.
- Indian journal of Psychometry and Education (july, 2014), Indian Psymetric And Educational Research Association, Agra.

Scanned by CamScanner